तृतीय अध्याय-

" 'कामना' और 'एक घूँट' में चित्रित समस्याएँ

"कामना' और 'एक घूँट' में चित्रित समस्याएँ"

"कामना' और 'एक घूँट' प्रतीकात्मक सैद्धांतिक नाटक हैं। सैद्धांतिक नाटक में नाटककार की अपनी विचारधारा अधिक क्रियाशील रहती है। वह कथावस्तु पात्र और संवादों का संयोजन उसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए नियोजित करता है और इसीलिए वह अमूर्त विचारों पर अधिक बल देता है। दूसरी ओर समस्या प्रधान नाटक में नाटककार निर्भिक और निरपेक्ष भाव से समस्या का विश्लेषण करता है। डॉ. बच्चन सिंह जी लिखते हैं - "कामना में समसामायिक समस्याओं के प्रचुर संकेत मिलते हैं।" ...[१] स्पष्ट है कि प्रतीकात्मक नाटक होते हुए भी प्रसाद ने युगीन समस्याओं का चित्रण किया है। समस्या प्रधान नाटकों की भाँति केवल समस्याओं को केंद्र बनाकर 'कामना' और 'एक घूँट' का निर्माण न होते हुए भी दोनों नाटकों में युगीन परिवेश की समस्याओं का चित्रण हुआ है।

विवेच्य नाटकों के कलेवर एवं वस्तु विस्तार के मद्देनजर हम कह सकते हैं कि 'एक घूँट' की अपेक्षा 'कामना' में अधिक समस्याओं का चित्रण होना स्वाभाविक है। दूसरी ओर एकांकी में एक अंक, एक समस्या का चित्रण होने का विधान है किंतु 'एक घूँट' के सृजन के पूर्व इस प्रकार का कोई मानदंड़ नही था। हिंदी की पहली एकांकी 'एक घूँट' में एक से अधिक समस्याओं के चित्रण को देखा जा सकता है।

अनुसंधान की सुविधा की दृष्टि से इस अध्याय को मैंने निम्न दो भागों में विभाजित किया है-

१. 'कामना' में चित्रित समस्याएँ

२. विवेच्य दोनो नाटकों में चित्रित समस्याएँ - (कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जिनका चित्रण दोनो नाटको में हुआ है, जिनका विवेचन दूसरे वर्ग में किया है।)

३.१ 'कामना' में चित्रित समस्याएँ :-

'कामना' प्रतीकात्मक नाटक होते हुए भी नाटक में निम्नलिखित समसामयिक समस्याओं का चित्रण किया गया है-

---

१ डॉ. बच्चन सिंह- 'हिंदी नाटक' - पृष्ठ १७५

३.१.१ स्वर्ण- लालसा की समस्या :-

'कामना' नाटक में सबसे प्रधान समस्या है- 'स्वर्ण- लालसा की समस्या'।'कामना' में प्रसाद जी ने स्वर्ण प्राप्ति के लिए ललायित फूलों के द्वीपवासियों के संघर्ष का चित्रण किया है। नाटक में विलास अपने देश की दारिद्रता से विताड़ित और अपने कुकर्मों से अपने ही देश से निष्कासित युवक है। द्वीप में आकर विलास के मन में प्राकृतिक जीवन व्यतीत करनेवाले द्वीपवासियों का शासक बनने की लालसा उत्पन्न होती है। विलास की महत्वाकांक्षा छाया रूप में प्रकट होकर उसे संदेश देती है-"बिना स्वर्ण और मदिरा का प्रचार किए तू इस पवित्र और भोली-भाली जाति को पतीत नही बना सकता।" [१]

विलास अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए द्वीप में स्वर्ण तथा मदिरा का प्रसार एवं प्रचार करता है। सबसे पहले वह कामना को अपने चमकीले स्वर्णपट्ट से प्रभावित करता है। कामना के पश्चात लीला, विनोद और लालसा भी स्वर्ण लालसा में डूबकर विलास के सहयोगी बन जाते हैं। धीरे-धीरे सभी द्वीपवासी विलास के पथानुगामी बन जाते हैं। स्वर्ण-लालसा में डूबे द्वीपवासी प्राकृतिक जीवन की सरलता, स्वास्थ्य और सौंदर्य को भूलाकर नीति, नियम, अभिशाप, ईर्ष्या, द्वेष और अनाचार युक्त जीवन जीने लगते हैं।

नाटक में दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में दो शिकारी स्वर्ण प्राप्त करने के लिए शांतिदेव की हत्या करते हैं। यहीं से द्वीप में अपराध एवं हत्याओं का सिलसिला शुरू होता है। अपराधियों को दंड़ देने हेतु दंड़ व्यावस्था आरंभ होती है।

विवेच्य नाटक में विलास द्वीपवासियों को अत्याधिक स्वर्ण प्राप्त करने के लिए नदी के उस पार के प्रदेश पर आक्रमण करने प्रेरित करता है।द्वीपवासी विलास के बहकावे में आकर नदी के उस पार के देश पर आक्रमण करते हैं। विवेक के समझाने पर भी धन या स्वर्ग-लालसा में अंधे बने द्वीपवासी विलास का साथ नहीं छोड़ते।

सब एक कुटुंब मानकर रहनेवाले द्वीपवासियों का बदलता स्वरूप देखकर करूणा संतोष से कहती है-"जीवन के समस्त प्रश्नों के मूल में अर्थ का प्राधान्य है।मैं दूर से उन धनियों के परिवार का दृश्य देखती हूँ। वे धन की आवश्यकता से इतने दरिद्र हो गये हैं कि उसके बिना उनके बच्चे उन्हें प्यारे नहीं लगते।" [२] करूणा के इस कथन से स्पष्ट होता है कि स्वर्ण-लालसा के कारण ही द्वीपवासी पारिवारिक सुख खो बैठते हैं।

१.जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - पहला अंक, तीसरा दृश्य- पृष्ठ १८

२.जयशंकर प्रसाद -- 'कामना' - दूसरा अंक, सातवाँ दृश्य - पृष्ठ ५७

द्वीपवासियों के पतन का मूल कारण उनकी स्वर्ण-लालसा ही है। संक्षेप में 'कामना' में प्रसाद ी ने स्वर्ण के आधीन होकर हृद्य का सुख खो बैठे फूलों के द्वीपवासियों का चित्रण किया है।

.१.२ मदिरा-सेवन की समस्या -

'कामना' नाटक में चित्रित दूसरी महत्वपूर्ण समस्या है- 'मदिरा - सेवन की समस्या'। डॉ. मेश गौतम जी ने लिखा है- " 'कामना' में अर्थ- लोलुपता के साथ-साथ अनिवार्य रूप से जो भीषण मस्या उत्पन्न हो जाती, वह है 'मदिरा का सेवन'।"[१] विलास अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ति हेतु फूलों के ्वीप में स्वर्ण के साथ-साथ मदिरा का भी प्रचार करता है। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करनेवाले, स्वयं ो तारा की संतान माननेवाले द्वीपवासी मदिरा के इतने व्यसनी हो जाते हैं कि किसी भी प्रकार की र्यादा व नैतिकता उनके लिए महत्व नहीं रखती।

पहले अंक के चौथे दृश्य में वनलक्ष्मी लीला के सामने प्रकट होकर उसे द्वीप पर आनेवाले ंकट की सूचना देती है। साथ ही उसे मदिरा-सेवन से दूर रहने की आज्ञा भी देती है, किंतु मदिरा ् नशे में डूबी लीला वनलक्ष्मी का विरोध करती है। इतना ही नहीं तो संतोष को छोड़कर विनोद से ैवाह करती है। विलास उपासना गृह में लीला और संतोष के विवाह के उपलक्ष्य में उपहार के रूप ें द्वीपवासियों को मदिरा पिलाता है। इस प्रकार सभी द्वीपवासी मदिरा-सेवन करने लगते हैं।

'कामना' में चित्रित युवा वर्ग मदिरा का इतना व्यसनी हो जाता है कि मदिरा के बिना उन्हें ीवन निष्प्रयोजन लगता है। इस बात को 'कामना' में एक पिता और पुत्र के वार्तालाप के माध्यम से ष्ट किया है। पिता अपने सोये हुए पुत्र को खेत में हल ले जाने के लिए जगाने जाता है, तब ाड़का पहले एक प्याली मदिरा की मांग करता है। उस पर पिताजी क्रोध से कहते हैं - "लड़के ! ुझे लज्जा नहीं आती ! मुझसे मदिरा माँगता है?

ाड़का : - "तो माँ से कह दो, दे जाय।" [२]

यह उदाहरण माता-पिता के प्रति आदरभाव के ह्रास का सूचक है, जिसका मूल कारण मदिरा-ेवन है। मदिरा सेवन के कारण अनेकों परिवार उजड़ जाते हैं। मदिरा पीकर मनुष्य पशु बन जाता और वह अपना अस्तीत्व खो देता है। मदिरा सेवन केवल परिवार के पतन का ही नहीं बल्कि देश, ाति, संस्कृति और मानवता के पतन का भी कारण है। मनुष्य मदिरा के नशे में डूबकर वास्तविकता

.डॉ. रमेश गौतम - 'प्रसाद के नाटक युग साक्ष' - पृष्ठ ६०

.जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - तीसरा अंक, पाँचवाँ दृश्य- पृष्ठ ८०

को भूलकर पतनोन्मुख हो जाता है, यही इस समस्या के चित्रण का प्रतिपाद्य है। 'कामना' में मदिरा-सेवन की समस्या के उद्‌घाटन और प्रस्तुतीकरण में प्रसाद को सफलता मिली है।

३.१.३ प्राकृतिक-जीवन के ह्रास की समस्या: -

'कामना' नाटक के प्रारंभ में ही प्रसाद जी ने महाभारत के श्लोक के माध्याम प्राचीन काल के प्राकृतिक जीवन का स्वरूप दिया है-

" नैव राज्यं न राजासीन्नचंदाडो डंडिका: ।

धर्म्मेणैव प्रज: सव्वा रक्षन्तिस्म परस्परम् ।।" [१]

अथात्- पहले न तो राज्य था और न राजा,न दंड़ विधान था और न दंड़ देनेवाला। धर्म से ही प्रजा परस्पर रक्षा करती थी।

प्राचीन काल के इसी आदर्श को आधार बनाकर प्रसाद जी ने 'कामना' में प्राकृतिक जीवन व्यतीत करनेवाले द्‌वीपवासियों का चित्रण किया है। द्‌वीपवासी स्वयं को तारा की संतान मानते थे और सब लोग एक कुटुंब मानकर जीवन व्यतीत करते थे।

भौतिकवाद का प्रतीक विलास द्‌वीप का शासक बनने की अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए द्‌वीप में स्वर्ण एवं मदिरा के प्रभाव से असंतोष, छल, अपराध, हिंसा आदि की सृष्टि करता है। द्‌वीपवासी स्वर्ण एवं मदिरा से प्रभावित होकर प्राकृतिक जीवन को छोड़कर भौतिक सुखों के पीछे दौड़ने लगते हैं।

द्‌वीप में अनाचारों, अपराधों का प्रचलन बढ़ने के कारण शासन व्यवस्था का जन्म होता है। विलास कामना को द्‌वीप की रानी बनाकर सत्ता की बागड़ोर अपने हात में लेता है। द्‌वीप के दो शिकारी स्वर्ण प्राप्त करने के लिए शांतिदेव की हत्या करते हैं और अपराधियों को दंड़ देने के लिए दंड़ व्यवस्था आरंभ होती है। विलास के सुझाव पर कामना विनोद को दंड़ नायक नियुक्त करती है। अपराधियों को बड़ी क्रूरता से प्राणदंड़ दिया जाता है ।

द्‌वीप की बदलती परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में करुणा संतोष से कहती है -" वह सुख के संगीत अब इस देश में कहाँ सुनाई पड़ते हैं, जिनसे वृक्षों में, कुंजों में हलचल हो जाती थी, पत्थरों में झनकार उठती थी। अब केवल एक क्षीण कंदन उसके अट्‌टाहस में बोलता है।" [२] स्पष्ट है की 'कामना' में द्‌वीपवासियों द्‌वारा की गई प्राकृतिक जीवन की उपेक्षा के कारण उनकी हुई दुर्गती का चित्रण प्रसाद जी ने किया है। दूसरी और नाटक के अंत में अनाचार युक्त क्रियाकलापों से उबकर प्राकृतिक जीवन का महत्व समझकर द्‌वीपवासी पुन: प्राकृतिक जीवन की ओर लौट आते हैं।

---

१. जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - तीसरा अंक, पाँचवाँ दृश्य- पृष्ठ ६

२. जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - दूसरा अंक, सातवाँ दृश्य-पृष्ठ ५७

आधुनिक यंत्र सभ्यता और भौतिकवादिता हमारे प्राकृतिक जीवन को नष्ट कर रही है। नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। संभाव्य विपत्तियों से बचने के लिए मनुष्य को पुनः प्रकृति से जुड़ी जीवन प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। यही इस समस्या को चित्रित करने का उद्देश्य रहा है। 'कामना' में प्राकृतिक जीवन के ह्रास की समस्या को प्रस्तुत करने तथा अंत में पुनः प्राकृतिक जीवन की सृष्टि करने में प्रसाद जी को सफलता मिली है।

३.१.४ पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृत्ति के अनुकरण की समस्या: -

'कामना' में प्रसाद जी ने पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृत्ति के अनुकरण की समस्या को विलास, लीला, लालसा आदि पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। भोगवादी प्रवृत्ति मानव मन को तुरंत प्रभावित करती है। डॉ. गौतम जी इस संबंध में लिखते हैं-" भोगवाद अपने वैभव के आकर्षण द्वारा किस प्रकार से मानव मन पर छा जाती है ? इसका सुंदर निरूपण 'कामना' में प्रस्तुत किया गया है।" [१]

कामना' में चित्रित पात्र - विलास पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृत्ति का प्रतीक है। विलास फूलों के द्वीप में स्वर्ण एवं मदिरा के माध्यम से पापाचार का प्रसार करता हैं वह अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु द्वीपवासियों को पथभ्रष्ट करता है। कामना निरंतर द्वीप का नेतृत्व करने हेतु; लीला कामना के समान स्वर्ण-पट्ट पाने हेतु; तो लालसा विलासमयी जीवन पाने हेतु विलास का साथ देते हैं। धीरे-धीरे सभी द्वीपवासी स्वर्ण एवं मदिरा को पाने हेतु विलास का साथ देते हैं। अथात् सब लोग प्राकृतिक जीवन की अपेक्षा भोतिक सुखों को महत्व देते हैं। परिणामतःउनमे भोगवादी प्रवृत्ति बढ़ती है। माता-पेता, पति-पत्नी, राजा-प्रजा आदि के प्रति उनके आदरभाव का ह्रास होता है। स्त्री को केवल भोग की वस्तु माना जाता है और स्वच्छंदवादी प्रेम की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। विधवा लालसा दूसरा विवाह करने पर भी शत्रू सैनिक से प्रेम की अभिलाषा करती है पुत्र अपने से माता-पिता से मदिरा की माँग करने लगता है। इससे स्पष्ट होता है कि द्वीपवासीयों को भौतिकवाद का अंधानुकरण करने के कारण द्वीपवासियों का सामाजिक, धार्मिक, अध्यात्मिक एवं नैतिक पतन होता है।

डॉ. चक्रवर्ती का कथन है- " समुद्रपार से आनेवाली पाश्चात्य जड़ोन्मुखी सभ्यता के प्रति प्रसाद जी के हृदय में तीव्र घृणा थी जिसने यहाँ के ग्रामीण जीवन की सरलता, और सभ्यता को विनष्ट कर उसे विषम और संघर्षपूर्ण बना दिया था।" [२] संभवतः प्रसाद जी के हृदय में स्थित पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति के प्रति तीव्र घृणा 'कामना' नाटक के माध्यम से प्रकट हुई है।

३.१.५ भारतीय संस्कृति के पतन की समस्या : -

'कामना' में प्रसाद जी ने प्रतीकात्मक शैली में पश्चिम के भौतिकवादी और भारतीय आदर्शवादी संस्कृति के संघर्ष का चित्रण किया है। भौतिकवादी प्रवृत्ति के कारण किस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का पतन होता है, इसका चित्रण 'कामना' में हुआ है।

---

१. डॉ. रमेश गौतम- 'प्रसाद के नाटक: युग साक्ष्य' -पृष्ठ ५९

२. डॉ. चक्रवर्ती- 'प्रसाद की दार्शनिक चेतना' - पृष्ठ ३६०

'कामना' में भौतिकवाद का प्रतीक विलास अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ति हेतु प्राकृतिक जीवन व्यतीत नेवाले द्वीपवासियों में काम, क्रोध, मोह, माया का प्रचलन करता है। भारतीय ऋषियों ने काम, ध, मोह, माया को ईश्वर और मुक्ति के मिलन में सबसे बड़ी बाधा माना है। भारतीय संस्कृति में चीन काल से ही पशुओं की पूजा करने का विधान है। किंतु 'कामना' में द्वीपवासी खेल-खेल में ुओं की हत्या करते हैं। अपनी प्रियसी को खुश करने और स्वर्ण प्राप्त करने हेतु दो द्वीपवासी तिदेव की हत्या करते हैं, जो अहिंसावादी भारतीय संस्कृति के विरूद्ध है।

भारतीय संस्कृति में नारी को आदर्श माना गया है, किंतु 'कामना' में स्त्री को केवल भोग की स्तु मात्र माना गया है। युद्ध में विजयी विलास के निम्न कथन से 'कामना' में चित्रित स्त्री के ति दृष्टिकोण अत्याधिक स्पष्ट होता है। वह कहता है- "युद्ध में स्त्री और स्वर्ण, यही तो लूट उपहार मिलते हैं। विजयी के लिए यही प्रसन्नता है।" [१] विलास द्वारा प्रतिपादित यह विलासोन्मुख रपिशाच वृत्ति भारतीय संस्कारों के विरूद्ध है।

भारत में आज भी घर-घर में सीता-राम, राधा-कृष्ण, और सत्यवान-सावित्री के आदर्श कनिष्ठ प्रेम की कहानियाँ सुनाई जाती हैं। इसके विरूद्ध 'कामना' में स्वच्छंद प्रेम का चित्रण किया या है।भौतिकवादी एवं भोगवादी प्रवृत्ति के कारण स्वच्छंद प्रेम के प्रति आसक्त समाज का चित्रण कामना' में किया गया है।मदिरा में डूबी लीला संतोष को छोड़कर विनोद से विवाह करती है। अपनी हत्वाकांक्षा पूर्ति हेतु विलास कामना से प्रेम करते हुए भी लालसा से विवाह करता है। लालसा पति ांतिदेव की हत्या के पश्चात तुरंत विलास से विवाह करती है और इतना ही नहीं तो वह शत्रू सैनिक ा प्रभावित होकर उसके मन में सैनिक के प्रति भी प्रणय भावना उत्पन्न होती है। स्पष्ट है कि कामना आदर्श एकनिष्ठ प्रेम के पतन का चित्रण है।

" मातृ-पितृ देवो भव" भारतीय संस्कृति का और एक पहलू है। किंतु 'कामना' में चित्रित पुत्र ्वारा माता-पिता से निसंकोच मदिरा की माँग करना माता-पिता के प्रति आदर भाव के लोप का ीक है। दूसरी ओर स्वर्ण-लालसा में अंधे माता-पिता स्वर्ण प्राप्त करने हेतु पुत्र को भीषण युद्ध में ज देते हैं। यहाँ पुत्र-प्रेम की भावना का पतन हुआ है।

इस प्रकार 'कामना' में भारतीय संस्कृति के आदर्श मूल्यों के पतन का चित्रण हुआ है। ारतीय संस्कृति के पतन की समस्या के माध्यम से प्रसाद जी ने पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति के ुष्परिणामों को पाठकों के सामने रखा है। यद्यपि नाटक में प्रसाद जी ने भारतीय संस्कृति के ावमूल्यन को रोकने हेतु आदर्शवादी विवेक का निर्माण किया है। प्रतीकात्मक दृष्टि से 'कामना' में ेत्रित विवेक भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। जिसके माध्यम से ही प्रसाद जी ने भारतीय-संस्कृति ी पुनः प्रतिष्ठा की है।

१.जयशंकर प्रसाद - 'कामना' - तीसरा अंक, दूसरा दृश्य-पृष्ठ ७४

३.६ युद्ध की समस्या : -

'कामना' नाटक के तीसरे अंक में युद्ध की समस्या का चित्रण हुआ है। मानव मन की अतृप्त ामना, लालसा और विलासता की प्रवृत्ति अनाचार, अपराध और हत्याओं से उपर उठकर युद्ध में रेणत होती है, इसका सुंदर निरूपण कामना में हुआ है।

शांतिदेव द्वीप में एक मात्र धनिक था। उसने साहस कर के नदी पार के अज्ञात प्रदेश की त्रा की थी। उस प्रदेश में समुद्र की रेत से सोना निकाला जाता था। शांतिदेव बहुत से पशुओं और भ्य मनुष्यों से बचते हुए वहाँ से सोना ले आया था। जब लालसा शांतिदेव के धनिक होने का स्य बताती है, तब कामना, विलास,लीला तथा विनोद के मन में अधिक से अधिक स्वर्ण प्राप्त करने लालसा उत्पन्न होती है। विलास के सुझाव पर स्वर्ण प्राप्त करने हेतु नदी पार के देश पर आक्रमण रने द्वीपवासी तैयार हो जाते हैं। कामना की मान्यता थी कि सब के पास जब आवश्यकता नुसार र्ण हो जाएगा, तभी द्वीप में फैली अशांति दबेगी। विलास स्वर्ण के साथ-साथ नवीन नगर का सक बनने का स्वप्न देखता है। परिणामतः भयंकर युद्ध होता है।

तीसरे अंक के दूसरे दृश्य में चित्रित रंगसंकेत-'रक्ताक्त कलेवर विजयी विलास का प्रवेश '[१] - द्ध की भीषमता का सूचक है। युद्ध की भीषमता के दृश्य को देखकर सेनापति विनोद मदिरा में कर मानसिक यातनाओं को भूलना चाहता है। भीषण युद्ध में विलास विजयी होता है और युद्ध पकड़े शत्रु पक्ष के पुरुषों और स्त्रियों को सैनिक न्यायालय में प्राणदंड़ देता है।

'कामना' का सृजन पहले विश्व -युद्ध के बाद हुआ था। प्रसाद का युग युद्ध की भीषणता देख चुका था। संभवतः इस प्रकार की भीषण हानि दूसरी बार न हो इस उद्देश्य से प्रसाद जी ने ामना' में युद्ध की समस्या को चित्रित किया है। इतना ही नहीं तो इस समस्या का उपाय प्राकृतिक वन में खोजने का प्रयास किया है। इसलिए नाटक के अंत में प्रसाद जी ने प्राकृतिक जीवन की ःस्थापना की है।

३.७ राजनीतिक - अराजकता की समस्या: -

प्रसाद का युग स्वातंत्रता आंदोलन एवं क्रांति का युग था। अंग्रेज़ों की अराजकता के कारण ारतीय जनता बुरी तरह से पीसी जा रही थी। संभवतः युगीन राजनीतिक अराजकता के घात-प्रघातों देखकर ही प्रसाद जी ने 'कामना' में 'राजनीतिक अराजकता की समस्या' का चित्रण किया है।

डॉ. बच्चन सिंह जी ने लिखा है-" 'कामना' नाटक में कुछ अंग्रेजी 'मोरेल्टी-प्लेज' की भाँति नीतिक समस्याएँ उठाई गई है। प्रसाद जी इस नाटक में उसी मार्क्सीय युटोपिया - अराजकता की गति - का समर्थन कर रहे हैं, जिसमें किसी प्रकार की शासकीय व्यवस्था की आवश्यकता नहीं है।

---

१. जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - तीसरा अंक, दूसरा दृश्य - पृष्ठ ७३

पर सिद्धांत उनको सीधे मार्क्सीय दर्शन से न प्राप्त होकर महाभारत से प्राप्त हुआ है।" [१] मना' में उस संस्कृति और व्यवस्था को श्रेष्ठ माना गया है, जिसमें न राजा था, न राज्य, न दंड न दंड़क। धर्म से ही प्रजा परस्पर रक्षा करती थी। नाटक में चित्रित द्वीपवासी स्वयं को तारा की ान मानते थे। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करनेवाली इस जाति को महत्व और आकांक्षा, अभाव और र्ष का पता नहीं था।

विलास अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ति हेतु अंग्रेजों की भाँति ही हिंसा, अनाचार, प्रलोभन की सृष्टि ता है। द्वीपवासियों को पतित करने के लिए वह स्वर्ण एवं मदिरा का प्रचार एवं प्रसार करता है। 'कामना' को रानी बनाता है और स्वयं मंत्री बन जाता है। शांतिदेव के हत्यारों कों दंड़ देने के ये दंड़ व्यवस्था निर्माण करता है और दंड़ देने के लिए विनोद को दंड़ नायक नियुक्त करता है। राधियों को बड़ी क्रूरता से प्राणदंड़ दिया जाता है। द्वीपवासी पवित्र पक्षियों द्वारा पिता का संदेश सुनकर विलास का संदेश सुनने लगे थे। विलास राज्य विस्तार हेतु और अधिका स्वर्ण प्राप्त करने लिए नदी पार के देश पर आक्रमण करता है। परिणामत: भीषण युद्ध होता है। युद्ध में पकड़े गये पराधी शत्रू सैनिकों को प्राणदंड़ दिया जाता है। संक्षेप में कठोर राजतंत्र ने अपराध- निरपराध सभी शासन की चक्की में बुरी तरह पीसना पड़ता है।

'कामना' में प्राकृतिक जीवन को भूले राजनीतिक अराजकता की समस्या से आहत हुए ीपवासियों का चित्रण किया गया है। किंतु प्रसाद जी ने सुराज्य की कल्पना की है। इसलिए नाटक संतोष और विवेक जैसे पात्रों की सृष्टि की है। अंत में संतोष और विवेक के प्रयासों के कारण जतंत्र भंग होता है और प्रजा में सुख-शांती लौट आती है।

।.८ अतृप्त कामना की समस्या : -

'कामना' में चित्रित पात्र-कामना, विलास, लालसा,लीला आदि मानव मनोवृत्तियों के प्रतीक हैं। मना और लालसा वस्तुतः दोनों एक ही है। नाटक में 'मानव मन की अतृप्त कामना मानव-जाति के न का प्रमुख कारण है' यह-'अतृप्त कामना की समस्या' के माध्यम से बताने का प्रयास किया है।

उपासना-गृह का नेतृत्व करनेवाली कामना सब कुछ होते हुए भी संतुष्ट नहीं है। वह कहती " संतोष ! हृदय के समीप होने पर भी दूर है, सुदंर है, केवल आलस के विश्राम का स्वप्न दिखाता परंतु अकर्मण्य संतोष से मेरी पटेगी नहीं !" [२] कामना उपासना-गृह का नेतृत्व हमेशा के लिए अपने ों में रखने हेतु विलास के दिखाए रास्ते पर चलती है। अतृप्त कामना विलासता में डूबकर नोन्मुख हो जाती है। वह अधिक स्वर्ण प्राप्त करने के लिए नदी पार के देश पर आक्रमण करने का देश देती है। विलासमयी अतृप्त कामना वास्तविकता को भूलकर अनाचार का साथ देती है।

---

१. डॉ. बच्चन सिंह - 'हिंदी नाटक' - पृष्ठ- १७६

२. जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - पहला अंक, पहला दृश्य - पृष्ठ-७

ाड़ित युवक विलास के हृदय में द्वीप का शासक बनने की अतृप्त कामना उत्पन्न होती है। अपनी त्वाकांक्षा पूर्ति हेतु वह द्वीप में स्वर्ण एवं मदिरा का प्रचार करता है। अपने उद्देश्य पूर्ति के योग्य री लालसा से विवाह करता है। कामना को द्वीप की रानी बनाकर स्वयं मंत्री बनता है। अपनी एक ोकामना पूर्ण होने पर भी नए नगर का शासक बनने की कामना उसके मन में उत्पन्न होती है। इस रण वह नदी पार के देश पर आक्रमण करता है।

शांतिदेव की हत्या के पश्चात उसकी पत्नी -लालसा उसके धन की मालकीन बन जाती है। सके अधिक धनि होते हुए भी वह अपने अतृप्त हृदय की अभिलाषा पूरी करने के लिए विलास से ाह करती है। फिर भी उसका अतृप्त मन तृप्त नहीं होता, वह शत्रू सैनिक के सामने प्रेम का ताव रखती है।

डॉ. बच्चन सिंह जी लिखते हैं- " जहाँ तक मानसिक जगत का संबंध है, लेखक (प्रसाद) का ध्य प्रतिपाद्य है कि विलासोन्मुख कामना को शांति नहीं मिल सकती, संतोष और विवेक से नियंत्रित मना ही सुखी और प्रसन्न रह सकती है।"[१] 'कामना' में चित्रित संतोष और विवेक के मानवतावादी ासों के कारण कामना के साथ सभी द्वीपवासी प्राकृतिक जीवन की और लौट आते हैं। जब की तृप्त मनोकामना के कारण विलास और लालसा स्वर्ण से लदी नाव के साथ समुद्र में डूब जाते हैं। तृप्त कामना को संतोष और विवेक के समन्वय द्वारा नियंत्रित किया जा सकत है।

१.९ राष्ट्र- प्रेमाभाव की समस्या :-

राष्ट्र के प्रति सम्मान, आदर एवं रक्षा का भाव राष्ट्र प्रेम की भावना का मूल आधार है। अस्तु ामना' में चित्रित पात्र व्यक्तिगत स्वार्थ को महत्व देते हैं। स्वर्ण और मदिरा के पीछे दौड़नेवाले ीपवासी द्वीप के नीति-नियम भूल जाते हैं । द्वीप के विकास की दृष्टि से वे कोई कार्य नहीं रते। स्पष्ट है कि उन में राष्ट्र के प्रति सम्मान, आदर एवं रक्षा की भावना नहीं है।

देशद्रोही विलास अपने कुकर्मों के कारण अपने ही देश से निष्कासित एवं विताड़ित युवक है। पने राजद्रोही स्वाभाविक प्रवृत्ती के कारण द्वीप का शासक बनने का स्वप्न देखता है। वह स्वर्ण एवं दिरा के माध्यम से द्वीपवासियों को प्रथभ्रष्ट करता है। स्वर्ण-पट्ट से प्रभावित कामना द्वीप का तृत्व हमेशा अपने पास रखने के उद्देश्य से विलास का साथ देती है। स्वर्ण और मदिरा के लिए ालायीत लीला और विनोद भी विलास का साथ देते हैं। अपनी दमीत वासना को तृप्त करने हेतु ालसा भी विलास से विवाह करती है। धीरे-धीरे सभी द्वीपवासी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति हेतु ालास के पथ पर चलने लगते हैं।

प्राकृतिक जाति के मूल में व्यक्तिगत स्वार्थ पनपने के कारण द्वीपवासी समुचित जाति या राष्ट्र ग विचार नहीं करते। उनमें राष्ट्र की उन्नति, राष्ट्र विकास की भावना न होने के कारण उनका ामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक पतन होता है। राष्ट्र प्रेम की भावना का अभाव राष्ट्र की उन्नति में बसे बड़ी बाधा है तथा राष्ट्र के पतन का प्रमुख कारण है, यह इस समस्या को उठाने का प्रमुख

---

१. डॉ. बच्चन सिंह- 'हिंदी नाटक'- पृष्ठ १७६

देश्य है।

दूसरी ओर 'कामना' में प्रसाद जी ने सच्चे राष्ट्र प्रेम को व्यक्त करने के लिए विवेक और तोष जैसे पात्रों की सृष्टि की है। दोनों मानवतावादी विचारों से प्रेरीत हैं। दोनों का युद्ध में घायल निकों की सेवा करना उनके राष्ट्र-प्रेम का प्रमाण है।वस्तुत: नाटक में आदि से अंत तक प्रसाद जी द्वीपवासियों के राष्ट्र- प्रेम की भावना के पतन को चित्रित किया है।

ष्कर्ष:-

'कामना' प्रतीकात्मक सैद्धांतिक नाटक होते हुए भी नाटक में समसामायिक समस्याओं का त्रण हुआ है। ' धन- लालसा की समस्या' मानव जीव सृष्टि के प्रारंभ से ही उपजी समस्या है। वभावत: पर्याप्त धन होने के कारण विलासता की प्रवृत्ति बढ़ती है और मनुष्य को 'मदिरा सेवन की मस्या' का सामना करना पड़ता है। 'कामना' में स्वर्ण-लालसा और 'मदिरा सेवन की समस्या' का त्रण हुआ है। 'कामना' में स्वर्ण एवं मदिरा के प्रलोभन फँसकर हृद्य और पारिवारिक सुख को खो ठे द्वीपवासियों का चित्रण हुआ है। द्वीपवासी जीवन की वास्तविकता को भूल जाते हैं और हित-हित, सत-असत से दूर हो जाते हैं। परिणामत: उनका नैतिक, सामाजिक, अध्यात्मिक पतन होता ।। प्रकृति से जुड़ी जाति विलासता में डूबकर प्राकृतिक जीवन को छोड़कर किस प्रकार पतीत होती ? इसका चित्रण 'कामना' में 'प्राकृतिक जीवन के ह्रास की समस्या' के माध्यम से हुआ है। वस्तुत: स समस्या के माध्यम से 'कामना' में प्रसाद जी ने प्राकृतिक जीवन के महत्व को स्पष्ट किया है।

पाश्चात्य भौतिकवादी प्रवृत्ति के अंधानुकरण के कारण विलासोन्मुख मनुष्य जीवन की ास्तविकता को भूल जाता है और स्वयं अपने विनाश का कारण बनता है। 'कामना' में आदि से अंत तक यही चरितार्थ है। दूसरी और यही भोगवादी अंधानुकरण सांस्कृतिक ह्रास का कारण है यह बताया गया है। वस्तुत: 'कामना' में भारतीय संस्कृति के ह्रास के कारण हैं-स्वर्ण एवं मदिरा की आसक्ति, भोगवादी प्रवृत्ति का अंधानुकरण, नारी के प्रति अनुचित दृष्टिकोण, स्वच्छंद प्रेम, पशु हत्या आदि।

प्रथम विश्वयुद्ध की भीषणता एवं दुष्परिणामों को प्रसाद जी देख चुके थे। संभवत: इस प्रकार की अमानवीय युद्ध पुन: कभी न हो इसी आशा से उन्होंने अपने नाटकों में युद्ध के दुष्परिणामों को अभिव्यक्त किया है। 'कामना' में चित्रित युद्ध का मूल कारण द्वीपवासियों की विलासता के प्रति आसक्ति है। वस्तुत: 'कामना' में चित्रित 'राजनीतिक-अराजकता की समस्या' के माध्यम से तत्कालीन युगीन राजनीतिक अराजकता का चित्रण किया गया है। नाटक में व्यक्तिगत स्वार्थ राजनीतिक-अराजकता की सृष्टि करता है, इसका चित्रण विलास के माध्यम से किया गया है। 'अतृप्त कामना की समस्या' के माध्यम से विवेच्य नाटक में यह स्पष्ट किया गया है कि विलासोन्मुख कामना कभी तृप्त नहीं होती। अतृप्त कामना को संतोष और विवेक के समन्वय द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। कामना' में चित्रित 'राष्ट्र-प्रेमाभाव की समस्या' का उद्देश्य यह बताना है कि - राष्ट्र प्रेम की भावना का अभाव राष्ट्र की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है और राष्ट्र के पतन का प्रमुख कारण है।

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

" ' कामना' और 'एक घूँट' में चित्रित समस्याएँ।"

३.२.१ स्वच्छंद- प्रेम की समस्या :-

पाश्चात्य भोगवादी प्रवृत्ति के परिणाम स्वरुप स्वच्छंद प्रेम का जन्म हुआ। स्वच्छंद प्रेम अर्थात् न मुक्त प्रेम। स्वच्छंद प्रेम से प्रभावित व्यक्ति समाजिक मर्यादाओं की पूर्णतः उपेक्षा करता है और क्तिगत अनुभूति को महत्व देता है। प्रेम की स्वच्छंद वृत्ति के कारण मनुष्य को अनेक समस्याओं का ना करता पड़ता है। डॉ. रामकुमार गुप्त लिखते हैं-"स्वच्छंद प्रेम में सामाजिक मर्यादाओं के पक्ष से कर केवल आत्मतृष्टि के लिए संयम और विवेक का त्याग कर देना ही समस्या उत्पन्न होना है।"[१]

स्वच्छंद प्रेम में भोगवादी प्रवृत्ति की प्रधानता होती है। इस कारण समाज की दृष्टि से वह र्श प्रेम नहीं है। रामायण में चित्रित सीता-राम का प्रेम सात्विक एवं आदर्श प्रेम है, जो हमारी दृष्टि पूजनीय है। आदर्श प्रेम में स्वार्थ की अपेक्षा बलिदान की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण होती है। दूसरी ओर र्श प्रेम की अवहेलना करनेवाला प्रेम भोगवादी प्रवृत्ति एवं स्वार्थता का निचोड होता है, जो समाज लिए अहितकारी होता है। डॉ. उमाशंकर सिंह जी लिखते हैं-" स्वच्छंद प्रेम शारीरिक भूख है, के आधार पर किसी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण की कल्पना नहीं की जा सकती। यह ारहीन प्रेम समाज के लिए हितकर नहीं हो सकता।" [२]

प्रसाद के 'कमना' और ' एक घूँट' में स्वच्छंद प्रेम की समस्या का चित्रण हुआ है। 'कामना' में ास, लालसा,लीला आदि पात्रों के माध्यम से, तो ' एक घूँट' में आनंद के प्रेम विषयक सिद्धांतों के यम से स्वच्छंद प्रेम का निरूपण हुआ है।

'कामना' में महत्वाकांक्षी युवक विलास भौतिकवाद का प्रतीक है। द्वीप का नेतृत्व कामना के ों में देखकर वह अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ति हेतु उससे प्रेम करने लगता है, किंतु वह उससे विवाह ं करना चाहता। वह ऐसी स्त्री चाहता है जो उसकी स्वार्थ पूर्ति की दृष्टि से उसकी सहायक हों। कारण वह लालसा से विवाह करता है। दूसरी ओर लालसा पति शांतिदेव की हत्या हो जाने के ात वैधव्य का जीवन जीने की अपेक्षा नए पुरूष को खोजने लगती है। प्रशंसा प्रिय ललसा विलास व्यक्तित्व से प्रभावित होती है और उसी से दूसरा विवाह करती है। फिर भी उसे आत्मसंतोष नहीं ता। डॉ. शर्मा जी इस संबंध मे लिखते हैं- "वह लालसा है, जन्मभर जिसमें पूर्णता नहीं आ ती। इसी अतृप्ति की दारूण ज्वाला में वह निरंतर जला करती है।" [३]लालसा के मानसिक अतृप्ति प्रतीति निम्नलिखित संवादों के माध्यम से होती है-

" सैनिक : जानती हो, कल तुम्हारे सेनापति ने मेरी स्त्री को पकड़ लिया है? आज तुमको यदि मैं पकड़ ले जाऊँ ?

---

१. डॉ. रामकुमार गुप्त- 'आधुनिक हिंदी नाटक और नाटककार' -पृष्ठ १२०
२. डॉ. उमाशंकर सिंह- 'हिंदी के समस्या नाटक' -पृष्ठ १००
३. डॉ. जगन्नाथ प्रसाद शर्मा- 'प्रसाद के नाटकों का अध्ययन' पृष्ठ २२६

लालसा : (मुसकिरा कर) कहाँ ले जाओगे?

सैनिक : यह क्या?

लालसा : कहाँ चलू, पूछती तो हूँ। तुम्हारे सदृश्य पुरूष के साथ चलने में किसी सुंदरी को शंका होगी?" [१]

ट है कि दूसरे पति विलास की अनुपस्थिति में लालसा अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए वह । सैनिक पर अपना प्रभाव जमाने का प्रयास करती है। स्पष्ट है कि लालसा के चरित्र में भोगवादी च्छंद प्रेम के दर्शन होते हैं।

लालसा के सादृष्य लीला के चरित्र में भी प्रेम की स्वच्छंदता के दर्शन होते हैं। वास्तव में ाला संतोष से प्रेम करती थी किंतु मदिरा के नशे में, कामना के कहने पर विनोद से विवाह करती । वह स्वर्ण मुकुट को पाना चाहती है इसीलिए कामना के प्रत्येक प्रस्ताव को स्वीकार करती हुई खाई देती है।

सक्षेप में 'कामना' में चित्रित विलास, लालसा, लीला आदि सामाजिक नियमों को तोड़कर क्तिगत स्वार्थ पूर्ति हेतु स्वच्छंद प्रेम का स्वीकार करते हैं। आदर्श प्रेम को त्यागने के कारण उनका तेक पतन होता है।

' एक घूँट' में चित्रित आनंद स्वच्छंद प्रेम का प्रसारक है। वह मानता है कि स्वच्छंद होने से ही ीवन को वास्तव में प्राप्त किया जा सकता है। एकनिष्ठ होने में एक बंधन है, जिससे प्रेम का ास्थ्य, सौंदर्य तथा सरलता नष्ट हो जाती है। उसकी धारणा है कि स्वच्छंद प्रेम को जकड़कर धने से, प्रेम की परिधि को संकुचित बनाने से मनुष्य दु:ख का भागी बनता है। आनंद की दृष्टि से वाहित जीवन स्वच्छंदता का सबसे बड़ा बंधन है, अंतः वह त्याज्य है। वनलता के विवाहित जीवन ी निराशता को देखते हुए वह कहता है- " देवि, तुम्हारा तो विवाहित जीवन है न ! तब भी हृदय खा और प्यासा ! इसी से मैं स्वच्छंद प्रेम का पक्षपाती हूँ।" [२]

इस प्रकार बौद्धिक धरातल पर आनंद स्वच्छंद प्रेम को आदर्श प्रेम सिद्ध कर देता है। कुल तथा प्रेमलता व्यक्तिनिष्ठ प्रेम की बात करते हैं, परंतु आनंद के तर्क के सामने अधिक ठहर हीं पाते।

मेरी दृष्टि से आनंद अपनी स्वच्छंतावादी प्रवृत्ति के कारण ही भटकता रहता है। नाटक में चित्रित नंद की घुम्मक्कड़ वृत्ति का मूल कारण उसके द्वारा किया गया स्वच्छंद प्रेम का समर्थन ही है। नी स्वच्छंद प्रेम की वृत्ति के कारण उसे वनलता से तिरस्कृत होना पड़ता है और अंत में प्रेमलता एकनिष्ठ प्रेम में बंधकर उसे सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति होती है।

---

१. जयशंकर प्रसाद- 'कामना' - तीसरा अंक, तीसरा दृश्य- पृष्ठ ७५

३. जयशंकर प्रसाद- 'एक घूँट'- पृष्ठ २३

३.२.२ एकनिष्ठ-प्रेम की समस्या :-

एकनिष्ठ-प्रेम अर्थात् बंधन युक्त प्रेम। सामाजिक मर्यादाओं के दायरे में रहकर, व्यक्तिगत नुभूति या स्वार्थ पूर्ति को महत्व न देते हुए किया गया प्रेम एकनिष्ठ होता है। प्रसाद के 'कामना' ौर 'एक घूँट' में स्वच्छंद प्रेम और एकनिष्ठ प्रेम का द्वंद्वं चित्रित है। एकनिष्ठ प्रेम के अभाव के ारण मनुष्य को विभिन्न समस्याओं से जुझना पड़ता है।

'कामना' में कामना, संतोष, विनोद, आदि पात्रों के माध्यम से एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यंजना ई है। कामना संतोष से प्रेम करती है। अस्तु विलास से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगती है जो सके स्वच्छंदता का द्योतक है किंतु अंत में कामना और संतोष का मिलन होता है और दोनों कनिष्ठ प्रेम में बंध जाते हैं। अतः स्पष्ट है कि अतृप्त कामना का संतोष से मिलन होने से ही उसे ति मिलती है। उधर संतोष कामना के दूर रहने पर भी अंत तक उसीसे प्रेम करता है। संतोष के न में व्यक्तिगत स्वार्थ का अभाव होना ही उसके एकनिष्ठ प्रेम का प्रमाण है। दूसरी और कामना के न में व्यक्तिगत स्वार्थ आने से उसका मन दुषित भावनाओं से भर जाता है।

' कामना' में चित्रित विनोद लीला से प्रेम करता है। उसे लीला के अभाव में अपना जीवन व्यर्थ गने लगता है। इस कारण कामना के संकेत मात्र से वह लीला से विवाह करता है। वह लीला के तिरिक्त अन्य किसी स्त्री को नहीं चाहता किंतु लीला के प्रत्येक प्रस्ताव को स्वीकार करने लगता है। ीला स्वर्ण पट्ट पाने हेतु विलास के पथ पर चलने लगती है। परिणामतः उनका नैतिक पतन होता । अंत में दोनों अपनी भूल को स्वीकार करते हैं और पुनः प्राकृतिक जीवन की और लौट आते हैं ।

इस प्रकार 'कामना' में चित्रित असफल एकनिष्ठ प्रेम अंत में सफल प्रेम में परिणित होता है। सरी ओर प्रेम की स्वच्छंद प्रवृत्ति के कारण विलास और लालसा आदर्श संस्कारों से दूर हो जाते हैं, नका नैतिक पतन होता है। फिर भी वे अपने स्वभाव को नहीं बदलते, इसलिए उनका अंत हो जाता । अत: हम कह सकते हैं कि एकनिष्ठ प्रेम के अभाव के कारण उनकी दुर्गति होती है।

प्रसाद जी ने ' एक घूँट' में वनलता, प्रेमलता, मुकुल, चँदुला और झाड़ूवाला आदि पात्रों के ध्यम से एकनिष्ठ प्रेम को प्रस्तुत किया है। वनलता के संबंध में डॉ. हांडा जी लिखते हैं-" वनलता माध्यम से प्रसाद जी ने प्रेम के व्यावहरिक पक्ष अथवा फ्रायडीय पक्ष को प्रस्तुत किया है। मानव मन जो चिरंतन काम-भावना है, यौन-तृप्ति की लालसा है, वही वनलता के चरित्र की विशेषता है। इस ानंद के तर्कमूलक स्वच्छंद प्रेम का विरोध करती है।" [१] इस बात की प्रतीति उसके निम्नलिखित थन से होती है- " और पेट की ही भूख-प्यास तो मानव-जीवन में नहीं होती। हृदय को- (छाती पर थ रखकर) कभी इसको--भी टटोलकर देखा है। इसकी भूख-प्यास का भी कभी अनुभव किया ?" [२] स्पष्ट है कि वनलता के चरित्र में प्रेम की एकनिष्ठता का आदर्श भाव भारतीय परंपरा के अनुरुप स्तुत किया गया है।

---

१ डॉ. बनवारीलाल हांडा- 'प्रसाद का नाट्यशिल्प'- पृष्ठ १८४

२ जयशंकर प्रसाद- 'एक घूँट' -पृष्ठ- २२-२३

दूसरी ओर प्रेमलता स्वच्छंद प्रेम के प्रसारक आनंद से प्रेम करती है, किंतु स्वच्छंद प्रेम का ोध करती हुई दृष्टिगोचर होती है। अंत में वह आनंद को प्रेम के एकनिष्ठ बंधन में बाँधती है और - रस की ' एक घूँट' पीलाती है। मुकुल तर्कशील युवक है जो आनंद के स्वच्छंद प्रेम का विरोध ता है। दूसरी ओर चँदुला, झाडूवाला और स्त्री आदि पात्रों के माध्यम से प्रसाद जी ने पारिवारिक वन की झाँकी प्रस्तुत करते हुए, 'एकनिष्ठ प्रेम' की महत्ता को उजागर किया है। साथ ही दोनों की त्रयों के भोगवादी प्रवृत्ति के कारण उन्हें पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पडता है। यह तिकवादिता एकनिष्ठ प्रेम में सबसे बड़ी बाधा है।

.२.३ पारिवारिक संघर्ष की समस्या : -

नई पीढ़ी के विचारों और पुरानी पीढ़ी के विचारों में अंतर होता है, जिस कारण नई पीढ़ी ार पुरानी पीढ़ी में संघर्ष होता है। डॉ. ओझा जी लिखते हैं- " शिक्षा, धर्म, राजनीति और अर्थ ाशिष्ट समाज के अन्य संघटनों में अंकुरित नवीन-क्रांति ने पारिवारिक जीवन को प्रभावित किया है। रेवार के व्यक्ति के पारस्परिक संबंधों में वैयक्तिक-स्वतंत्रता और बुद्धिवाद की ओर प्रवाह आया है। ातृ-पितृ-भक्ति, आजाकारिता, पति-भक्ति, गृहस्थ जीवन की मर्यादा आदि के स्थान पर व्यक्तिगत चार के प्रति सद्भावना को महत्व दिया जाने लगा है।" [१] 'कामना' और ' एक घूँट' में पारिवारिक घर्ष की अभिव्यंजना हुई है। वैयक्तिकता या व्यक्तिगत स्वार्थ पारिवारिक विघटन का मूल कारण है स बात की प्रतीति विवेच्य नाटकों से होती है।

'कामना' में चित्रित द्वीपवासी सभी एक जाति, एक परिवार मानकर जीवन व्यतीत करते आए । वे स्वयं को खेल खेलने आयी तारा की संतान मानते थे। वे एक धर्म छत्र में रहकर उपासना रते थे। प्राकृतिक जीवन व्यतीत करनेवाले द्वीप में निष्कासित युवक विलास राजनीतिक स्वार्थ र्ति हेतु अधर्म, अनाचार और कुटिलता की सृष्टि करता है। अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए इ द्वीप में स्वर्ण एवं मदिरा का प्रचार करता है। परिणामत: राजनीतिक स्वार्थ, स्वर्ण लालसा और दिरा के प्रभाव के कारण द्वीपवासियों का परिवारिक विघटन होता है। स्वच्छंद प्रेम से प्रभावित ास-लालसा,लीला और संतोष पति-भक्ति एवं गृहस्थ जीवन की अपेक्षा व्यक्तिगत विचारों को महत्व । लगते हैं। एक दूसरे के साथ रहते हुए भी उनमें दूरी-सी बनी रहती है।

'कामना' में चित्रित माता- पिता और पुत्रों में मातृ- पितृ भक्ति एवं अज्ञाकारिता की भावना का भाव है। एक परिवार में रहते हुए भी उन्हें पारिवारिक संघर्षों से जुझना पड़ता है। अपने सोये हुए त्र को खेत में काम करने के लिए उठाने गए पिता को पुत्र से ताड़ना मिलती है। अवज्ञाकारी पुत्र ता से बेझीझक मदिरा की माँग करता है। जब पिता पुत्र के प्रस्ताव को मानने से इनकार करता है, ब वह कहता है कि माँ से कह दो की दे जाए। यहाँ पुत्र का माता- पिता के प्रति अनादर व्यक्त ता है। दूसरी ओर माता- पिता के वार्तालाप के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि माता ने आभूषणों

---

१. डॉ मान्धता ओझा- 'हिंदी समस्या नाटक'- पृष्ठ-१५७-१५८

ो पाने के लिए अपने पुत्र को युद्ध में भेज दिया है। अत: हम कह सकते हैं कि उनमें पुत्र-प्रेम का भाव है।

उधर शांतिदेव की विधवा लालसा विलास से दूसरा विवाह करती है। अपितु विलास के दूर ाते ही वह शत्रू सैनिक पर मोहित होती है। उनके चरित्र में आदर्श पत्नी और पति- भक्ति की भावना ा सर्वथा अभाव है।

' एक घूँट' में वनलता, चँदुला, तथा झाड़ूवाला और उसकी स्त्री आदि पात्रों के माध्यम से रिवारिक समस्या को अभिव्यक्ति किया गया है। प्रकृति प्रेमी, भावुक कवि रसाल की पत्नी वनलता पने पारिवारिक जीवन से असंतुष्ट है। उसके सारे कार्यकलाप रसाल को आकर्षित करने के प्रयत्न रूप में चित्रित है। रसाल वनलता की भावनाओं को नहीं समझ पाता। इस कारण दोनों के विचारों, ार्यकलापों में अंतर आ जाता हैं। वे पति-पत्नी होते हुए भी ग्रहस्थ- जीवन के सुख से वंचित हो जाते ।

चँदुला और उसकी पत्नी के पारिवारिक अस्थिरता के प्रमुख कारण हैं- विचारों का असामंजस्य ार अर्थ अभाव। वैयक्तिक स्वतंत्रता एवं बुद्धिवाद से प्रभावित चँदुला की पत्नी आर्थिक अभाव को दूर रने हेतु उसे विज्ञापन करने के लिए मजबूर करती है। स्पष्ट है कि चँदुला की पत्नी में पति के प्रति ादर की भावना लुप्त हो गई है। दूसरी ओर चँदुला विज्ञापन करनेवाला एक विदूषक मात्र रह जाता और हँसी का पात्र बनता है। उसके इस रूप से लोगों को आनंद मिले या न मिले, वह उसके ांत:य सुखाय का साधन है। वह कहता है- " आपको मेरा विज्ञापन देखकर आनंद नहीं मिला, न ले; किंतु इन्हीं पंद्रह दिनों में जब मेरी श्रीमती हार पहनकर अपने मोटे-मोटे अधरों की पगड़ंड़ी पर ी को धीरे धीरे दौड़ावेंगी और मेरी चँदुली खोपड़ी पर हल्की-सी चपत लगावेंगी तब क्या मैं आँख दकर आनंद न लूँगा।" [१]

झाड़ूवाला एक पढ़ा लिखा युवक है, जो अपनी पत्नी की प्रेरणा से द्वीप में रहने आया है। अर्थ भाव के कारण झाड़ूवाला अपनी पत्नी की स्त्री-जनसुलभ लालसाओं को पूरा नहीं कर पाता। इस रण दोनों में संघर्ष होता रहता है। झाड़ूवाला और उसकी पत्नी के बीच कलह का प्रमुख कारण अर्थ ाव है, जिस कारण उन्हें पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

संक्षेप में विवेच्य दोनों नाटकों में राजनीतिक, आर्थिक, वैयक्तिक स्वतंत्रता, बुद्धिवाद का ाव, मातृ-पितृ एवं पति-भक्ति की भावना का ह्रास आदी से उत्पन्न पारिवारिक समस्याओं का चित्रण ा है।

२.४ मानसिक -संघर्ष की समस्या : -

मानव मन की अतृप्त अकांक्षाओं के कारण मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है। मानसिक संघर्ष र्थात् मन में स्थित विचारों का द्वंद्व है। मानव जीवन की निराशा, कुण्ठा, असफलता और नेश्चित ध्येय मानसिक संघर्ष के प्रमुख कारण होते हैं। 'कामना' और 'एक घूँट' में मानसिक संघर्ष

---

१. जयशंकर प्रसाद- 'एक घूँट' - पृष्ठ ३३

मस्या को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। विवेच्य नाटकों के प्राय: सभी स्वगत-कथन के मानसिक संघर्ष को स्पष्ट करते हैं।

'कामना' नाटक के प्रारंभ में वृक्ष की छाया में लेटी हुई कामना अपने जीवन की अपूर्णता पर : करती है। उसे अपना जीवन निरस लगने लगता है। सब कुछ होते हुए भी वह संतुष्ट नहीं है। हान बनना चाहती है, वह पूर्ण बनना चाहती है। उसकी अतृप्त आकांक्षा दिशाहीन अज्ञात होते ी वह उसकी पूर्ति एवं पूर्णता की आशा करती है। वह स्वगत कहती है- " मैं क्या चाहती हूँ? जो प्राप्त है, इससे भी महान। वह चाहे कोई वस्तु हो। हृदय को कोई करो रहा है। कुछ आकांक्षा है; या है? इसका किसी को विवरण नहीं देना चाहती। केवल वह पूर्ण हो, और वहाँ तक, जहाँ तक उसकी सीमा हो।" [१] नाटक में कामना द्वारा गाये गए गीत उसकी मनोदशा का प्रकट करते हैं। स के व्यक्तित्व से प्रभावित विलासोन्मुख कामना का निम्न गीत उसके मानसिक उथल-पुथल का क है। विलास के प्रेम में व्याकूल कामना एकांत में गाती है-

" घिरे सघन घन नींद न आयी, निर्दय भी न अभी आया !

X X X X X X X X X

उमड़ चले आँखों के झरने, हृदय न शीतल हो पाया !" [२]

' कामना' में विलास के मानसिक संघर्ष को प्रकट करने के लिए महत्वाकांक्षा और छाया इन ात्रों की सृष्टि की गई है। विलास के मानसिक संघर्ष के माध्यम से उसकी कुटनीति का परिचय ता है। विलास के व्यक्तित्व एवं स्वर्णपट्ट के उपहार से प्रभावित कामना उसके सामने विवाह का ाव रखती है। विलास भी विवाह के पवित्र बंधन में बँधकर सुखी होने का स्वप्न देखता है। तो री ओर वह कहता है- " परंतु मेरी मानसिक अव्यवस्था कैसे छाया-चित्र दिखलाती है ! कोई श्य शक्ति संकेत कर रही है।-नहीं, कामना एक गर्व-पूर्ण और सरल हृदय की स्त्री है। X X X में ाको अपना हृदय समर्पण नहीं कर सकता।" [३] विलास अपनी महत्वकांक्षा पूर्ति हेतु लालसा से विवाह ता है। द्वीप का शासक बनने के लिए वह कोई भी कुर्बानी देने तैयार है। लालसा का शस्त्रू नेक के प्रति आकर्षण देखकर वह आत्महत्या करने की सोचता है, किंतु दूसरे ही पल वह सोचता " विलास ! विलास ! तुझे क्या हो गया है? तुझे इससे क्या ? राज्य यदि करना है, तो इन छोटी-टी बातों पर क्यों ध्यान देता है ? अपनी प्रतिभा से शासन कर !" [४] शांतिदेव की हत्या के पश्चात नके अपार धन की मालकीन बनती है- लालसा। पर्याप्त धन होते हुए भी वैधव्य एवं अकेलेपन की झा से वह त्रस्त है। परिणामतः उसके चरित्र में मानसिक संघर्ष की सृष्टि होती है।वह सोचती है-

---

१. जयशंकर प्रसाद- 'कामना'- पहला अंक, पहला दृश्य- पृष्ठ ११

२ वही - पहला अंक, चौथा दृश्य पृष्ठ २४

३ वही - दूसरा अंक ,चौथा दृश्य- पृष्ठ ४७

४ वही - तीसरा अंक ,चौथा दृश्य- पृष्ठ ७६

" मेरा कोई नहीं है; साथी, जीवन का संगी और दु:ख में सहायक कोई नहीं है। अब यह न बोझ हो रहा है। क्या करूँ अकेली बैठी हूँ, इतना सोना है परंतु इसका सुख नहीं। ओह!" [१] सा का यह स्वगत-कथन उसके दु:खी जीवन के मानसिक संघर्ष को अभिव्यक्त करता है।

'कामना' में चित्रित विवेक के मानसिक संघर्ष का प्रमुख कारण है- द्वीपवासियों का नैतिक वह स्वगत सोचता है- " पिता ! पिता ! हम डरेंगे, तुमसे काँपेंगे? क्यों? हम अपराधी हैं। X X दंड दोगे। X X X किसने हमारे प्रभात का स्वप्न भंग किया? स्वप्न-आ! कुदृश्यों से थकी हुई ऑखों ाली आ ---- विश्राम! आ! मुझे शीतल अंक में ले !--- ऊँह ! सो जाऊँ !" [२]

सक्षेप में 'कामना' नाटक में कामना, विलास, लालसा, लीला तथा विवेक आदि पात्रों के माध्यम ानसिक संघर्ष की समस्या को चित्रित किया गया है।

'घूँट' का आरंभ अरूणाचल आश्रम में मौलसिरी के नीचे वेदी पर बैठी वनलता के मानसिक संघर्ष आ है। नेपथ्य गीत " खोल तू अब भी आँखे खोल!" उसके वैवाहिक जीवन की व्यथित भावनाओं उत्तेजित करता है। गीत समाप्ति के पश्चात कोयल की कूक उसे असह्य होती है। वह कहती है-

" कितनी टीस है, कितनी कसक है, कितनी प्यास है;

नरंतर पंचम की पुकार ! कोकिल तेरा गला जल उठता होगा।

विश्वभर से निचोड़कर यदि डाल सकती तेर सूखे गले में एक घूँट'" [३]

एक घूँट'से तात्पर्य है- प्रेम रस की एक घूँट। पति के प्रेम की प्यास वनलता के अतृप्त प्रेम की ा की अभिव्यंजना उसके निम्न स्वगत कथन से होती है-

ना होती है। व्यथा कसती है। प्यार के लिए प्यार करने के लिए नहीं , प्रेम पाने के लिए । विश्व इस अमूल्य संपत्ति में क्या मेरा अंश नहीं।" [४]

'एक घूँट'में चित्रित गीत पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करते है। शुष्क तर्कों से उत्पन्न ग्लानी को करने वनलता के अनुरोध करने पर प्रेमलता निम्न गीत गाती है -

"जीवन-वन में उजियाली है।

यह किरनों की कोमल धारा--

बहती ले अनुराग तुम्हारा--

फिर भी प्यासा हृदय हमारा--

व्यथा घूमती मतवाली है।" [५]

---

१ जयशंकर प्रसाद- 'कामना'-दूसरा अंक, छठा दृश्य- पृष्ठ ५२

२ वही - पहला अंक, पांचवा दृश्य- पृष्ठ २८

३ जयशंकर प्रसाद-' एक घूँट'- पृष्ठ १२

४ वही -पृष्ठ ३९

५ वही -पृष्ठ २३

वस्तुतः यह गीत उसके हृदय में अंकुरित प्रेम भावना को अभिव्यक्त करता है। आनंद के क्तित्व से प्रभावित प्रेमलता मन ही मन उसे चाहने लगती है। यह गीत उसके मानसिक उथल-पुथल ा सूचित करता है। दूसरी ओर रसाल के आनंदवादी विचारों के विरूद्ध उसके द्वारा लिखित गीत ु गाती है। गीत की निम्नलिखित पक्तियाँ रसाल के कल्पना की दुर्बलता को व्यक्त करती हैं-

" -- आशा-लतिका काँपती थरथर --

गिरे कामना-कुंज हहरकर

-- अंचल में है उपल रही भर -- यह करूणा- बाला ।" [१]

संक्षेप में ' एक घूँट'में वनलता आनंद,रसाल और प्रेमलता आदि पात्रों द्वारा मानसिक संघर्ष की मस्या को चित्रित किया गया है।

मानसिक संघर्ष से पीड़ित मनुष्य जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख ही पाता है। सुख की तलाश उभरे मानसिक संघर्ष की परिणती उसके मन की बैचैनी में परिवर्तित होती है। विवेच्य कृतियों में त्रित मानसिक - संघर्ष की समस्या में यही चरितार्थ है।

ष्कर्ष : -

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विवेच्य नाट्यकृतियों में कुछ ऐसी समस्याएँ हैं जिनका त्रण दोनों कृतियों में हुआ है। साथ ही हम कह सकते हैं कि विवेच्य दोनों कृतियों में समस्याओं को ीकात्मक ढ़ंग से अभिव्यक्त करने प्रसाद जी को सफलता मिली है।

'स्वच्छंद प्रेम' और 'एकनिष्ठ प्रेम' की समस्याओं का चित्रण द्वंद्वं के रुप में हुआ है। इस ंद्वं में'एकनिष्ठ प्रेम'को आदर्श प्रेम के रुप में स्वीकार किया गया है और 'स्वच्छंद प्रेम' को संघर्ष ' कारण माना गया है। इन समस्याओं के चित्रण द्वारा प्रसाद जी ने वासना रहित, आदर्श एवं रतीय संस्कारों से पुष्ट प्रेम के आदर्श की स्थापना की है। विवेच्य कृतियों में प्रेम की विस्तृत व्याख्या ' गई है, अस्तु प्रेम की परिधि को विस्तार के साथ प्रकट करना कार्य ' एक घूँट'की अपेक्षा ामना' में अधिक हुआ है। 'एक घूँट' में प्रणय एवं पारिवारिक प्रेम का ही रूप दृष्टिगोचर होता है ब की कामना में इसके अतिरिक्त विवेक, संतोष के माध्यम से राष्ट्र प्रेम की भी अभिव्यंजना हुई

विवेच्य कृतियों में पारिवारिक संघर्ष की समस्या को दोनों कृतियों में अलग-अलग कारणों के ्यम से प्रस्तुत किया गया है। 'कामना' में चित्रित पारिवारिक संघर्ष के कारण हैं- धर्म, राजनीति, र्ा- विशिष्टता, समाज के अन्य संघटनों में अंकुरित नवीन क्रांति का पारिवारिक जीवन पर पड़ रहा भाव। ' कामना' में इस समस्या के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि पारिवारिक संघर्ष स्त परिवार, जाति और राष्ट्र के पतन का कारण है। 'एक घूँट'में चित्रित पारिवारिक संघर्ष के

.जयशंकर प्रसाद-' एक घूँट'-पृष्ठ २७

रण हैं- पति-पत्नी के बीच विचारों का असामजस्य, अर्थ-अभाव, वैयक्तिक स्वतंत्रता और स्त्री-सुलभ लालसा। 'एक घूँट'में इस समस्या के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि पारिवारिक र्ष मानव जीवन में सुख की अपेक्षा दु:खों की सृष्टि करता है।

मानव मन की अतृप्तता, निराशा, कुंठा और असफलता मनुष्य के मानसिक संघर्ष के प्रमुख कारण हैं। विवेच्य दोनों कृतियों में यही चरितार्थ है। 'कामना' में कामना, विवेक, विलास, लालसा आदि तो 'एक घूँट' में वनलता, रसाल,प्रेमलता आदि पात्रों के माध्यम से मानसिक द्वंद्वं की अभिव्यंजना हुई है। विवेच्य नाटकों में चित्रित स्वगत- कथन एवं गीत संदर्भित पात्रों के मानसिक संघर्ष को व्यक्त करते है। विवेच्य नाटकों में चित्रित मानसिक संघर्ष की समस्या के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मन के संघर्ष से सुख की अपेक्षा दु:ख ही प्राप्त हो सकता है।